मुद्गल पुराण में शिवतत्त्व

महर्षि मुद्गल प्रणीत इस पुराण की गणना अतिपुराणों में होती है। इसमें भगवान् गणेश की महिमा को प्रतिपादित किया गया है। यह ग्रन्थ गाणपत्यों के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस विशाल ग्रन्थ में 9 प्रमुख अध्याय(जिसमें कई उप-अध्याय हैं) तथा 1003 पृष्ठ(लगभग 22000-23000 श्लोक) हैं। यद्यपि इस पुराण में सर्वत्र भगवान् गणपति के माहात्म्य की ही चर्चा है तथापि अल्प मात्रा में पाये जानेवाले भगवान् शिवसंबंधी संदर्भों में शिवजी को ही परमब्रह्म अथवा परमतत्त्व स्वीकार किया गया है।

भगवान् शिव का स्वरूप

सती ने अपने पिता दक्ष के द्वारा आयोजित यज्ञ में जाने के लिये शिव से अनुमति प्राप्त करने हेतु जिस तरह से निवेदन किया है उसमें उसने उन्हें नीलकण्ठ, कल्याणकारी, सगुण, निर्गुण एवं मृड(सुखदाता) कहा है।

नीलकण्ठ नमस्तुभ्यं शंकराय शिवाय च।
सगुणाय मृडायैव निर्गुणाय नमो नमः।। (मुद्गल पु. 1/3/41)

सती दक्ष के यज्ञ में भगवान् शिव का भाग न देखकर दक्ष से अन्य बातों के अतिरिक्त यह कहती हैं कि दो अक्षरों वाला 'शिव' निर्गुणब्रह्म है जिसने सगुणरूप धारण किया हुआ है। इस बात को तुम नहीं जानते इस कारण से मैं बहुत दुःखी हूँ।

शिवेति द्व्यक्षरं ब्रह्म निर्गुणं गुणधारणम्।
न जानासि यतस्त्वं भोस्तेनाहं दुःखिताभृशम्।। (मुद्गल पु. 1/4/59)

एक स्थल पर स्तुति करते हुए शिवजी को शान्त, त्रिशूली, महादेव, पशुपति, काल एवं परमेश्वर आदि कहा गया है। (मुद्गल पु. 1/4/76-77)

नमः शिवाय शांताय शूलिने शंभवे नमः।
महादेवाय रुद्राय पशूनां पतये नमः।।
संहाररूपी त्वं...।
....................महाबाहो नमस्ते परमेश्वर।।

दक्ष भगवान् शिव की गरिमा को पहचानने के बाद उनकी स्तुति करते हैं। अपनी स्तुति में उन्होंने भगवान् शिव को सम्पूर्ण जगत् का आधार तथा कालरूप कहा है। 'काल' की विशेषता बताते हुए वे कहते हैं कि काल से ही फल, मूल, अन्नादि, सर्दी, गर्मी, सूर्य का तपना, वृष्टि, अनावृष्टि आदि होता है। काल से ही ब्रह्मा सृष्टि की रचना, विष्णु पालन तथा रुद्र संहार करते हैं। जो कुछ भी अस्तित्वमान है, वह काल के अधीन है। वह काल ही भगवान् शिव हैं जिनकी संज्ञा ब्रह्म दी जाती है। वेद एवं वेदज्ञ उन्हें साक्षात् ब्रह्म कहते हैं। आगे दक्ष ने अपनी स्तुति में शिव को दयासिन्धु,

परमेश्वर, सगुण, निर्गुण, सृष्टिकर्त्ता, संहर्त्ता, पालनकर्त्ता, अनंत गुणों की राशि, अवर्णनीय, जिसका अन्त ब्रह्मादि द्वारा भी नहीं जाना जाता, ब्रह्ममय, पूर्णमूर्ति, अनादि, मध्य एवं अन्त से रहित तथा भक्तों के भय को हरनेवाला कहा है (मुद्गल पु. 1/4/91-100)।

कालेन सृज्यते सृष्टिर्ब्रह्मणा वै पुनः पुनः।
कालेन पालनं तत्र कुरुते विष्णुरव्ययः।।
कालेन स्वेच्छया शंभुः संहारं प्रकरोति च।
यत्किंचिदिह तत्सर्वं कालाधीनं न संशयः।।
स एव कालो भगवानीश्वरो ब्रह्मसंज्ञितः।
शिवः साक्षाच्च वेदेषु कथ्यते वेदवादिभिः।।
सगुणाय नमस्तुभ्यं निर्गुणाय नमोनमः।
सृष्टिकर्त्रे च संहर्त्रे पात्रे नानास्वरूपिणे।।
अनंतगुणराशिस्त्वं वर्णनीयं किमप्य हो।
नान्तं ब्रह्मादयो जग्मुर्मादृशानां च का कथा।।
नमो नमो ब्रह्ममयाय देवादये शिवायाथ च पूर्णमूर्ते।
अनादिमध्यान्तविहीन न भूम्ने नमो नमो भक्तभयापहन्त्रे।।

(मुद्गल पु. 1/4/94-96, 98-100)

पार्वतीजी किसी प्रसंग में भगवान् शिव को देवताओं, नागों, राक्षसों, मनुष्यों आदि सभी द्वारा पूज्य, उनके स्वामी, उन्हें वर प्रदान करनेवाले, सबके ईश्वर, पुरातन तथा माया एवं विकारों से हीन कहा है।

शिव त्वं सर्वदेवानां नागानां रक्षसां तथा।
मानवानां च सर्वेषां पूज्यः स्वामी न संशयः।।
तेभ्यः वरप्रदाता त्वं सर्वाधीशः पुरातनः।
मायाविकारहीनश्च शिवस्तेन प्रकीर्तितः।। (मुद्गल पु. 1/5/21-22)

सृष्टि के आदि में एक बार ब्रह्मा एवं विष्णु में परस्पर श्रेष्ठता को लेकर विवाद उठा था। फलस्वरूप इसका निर्णय करने के लिये दोनों ने एक दूसरे के उदर में क्रमशः प्रवेश किया तथा उसमें अनंत सृष्टियों को देखकर एक दूसरे को महान् समझने लगे। ब्रह्माजी जब विष्णु के उदर से बाहर निकलना चाहते थे उस समय विष्णु ने निकलने के सारे द्वार बन्द कर लिये। परन्तु ब्रह्माजी ने योग-बल के सहारे नाभी कमल के रास्ते बाहर निकल कर विष्णु से कहा कि हम दोनों ही श्रेष्ठ एवं सर्वेश्वर हैं। अतः इसका प्रमाण प्राप्त करना चाहिये। प्रमाण प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम शिव का आवाहन किया गया। भगवान् शिव प्रकट हो उनसे पूछते हैं कि आप लोगों ने मुझे क्यों स्मरण किया

है? उत्तर में दोनों ने कहा कि हम आपका ऐश्वर्य देखना चाहते हैं। उन दोनों के गर्वयुक्त वचन सुनकर भगवान् शिव ने उनसे कहा कि मैं ही सबका कर्त्ता हूँ, मेरे से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। ऐसा कहकर उन्होंने अपना सर्वत्र स्थित ज्योतिरूप महालिंग प्रकट किया। उनके इस रूप को देखकर वे दोनों विस्मित हुए तथा ब्रह्माजी ने उस ज्योतिर्लिंग के ऊपरी भाग तथा विष्णु ने उसके निचले भाग को जानने के लिये क्रमशः ऊपर एवं नीचे की दिशा में प्रस्थान किया। परन्तु वे दोनों उस लिंग का आदि एवं अन्त न पाकर निराश होकर वापस लौटे और भगवान् शिव की गरिमा को जानकर उनकी स्तुति करने लगे। वे अपनी स्तुति में उन्हें शूलपाणी, रुद्र, कालरूप, त्र्यंबक, वृषभेश्वरवाहन, आदिदेव, महादेव, जिनके रूप एवं स्वभाव को कोई नहीं जानता, महेश्वर, विभु, जिनके भजन से लोग निर्भय रहते है तथा परमेश्वर कहते हैं। जिसके वाम भाग में विष्णु, दक्षिण भाग में ब्रह्मा तथा जिसके लिंग में संपूर्ण चराचर विश्व स्थित है, उसकी महिमा अपार है। उनकी प्रार्थना को सुनकर भगवान् शिव पूर्ववत् अपने स्वरूप में लौट आये तथा उनसे वर माँगने को कहा(मुद्गल पु. 1/13/43-50)।

आदिदेवाय देवाय महादेवाय ते नमः।।
प्रसीद भगवन् शंभो नांतं पश्यावहे विभो।
किं रूपं किंस्वभावं त्वां न जानीवः कथंचन।।
..।
येन ते भजनं देव जनाः कुर्वन्ति निर्भयाः।।
वामभागे स्थितं विष्णुं दक्षिणांगे पितामहम्।
विश्वं चराचरं सर्वं लिंगे तत्रास्य संस्थितम्।।
..।
उपसंहर रूपं तत्त्वमेव परमेश्वरः।। (मुद्गल पु. 1/13/43-45, 47-48)

अर्थात्- आदिदेव महादेव को नमस्कार है। हे सर्वव्यापी भगवान् शंभु हम आपके अन्त को नहीं जान पा रहे हैं आप प्रसन्न होइए। आपका क्या रूप एवं स्वभाव है इसे कोई नहीं जानता। ....आपका भजन लोगों को निर्भय करता है। जिसके वाम भाग में विष्णु एवं दक्षिण भाग में पितामह स्थित हैं तथा जिसके लिंग में यह सम्पूर्ण चराचर विश्व स्थित है ....। हे परमेश्वर आप इस रूप को त्याग दीजिये।

शिवोपासना

भगवान् शिव चूँकि सर्वश्रेष्ठ देव हैं इसलिये उनकी ही उपासना करना सर्वश्रेष्ठ है। भगवान् शिव को देवताओं, राक्षसों तथा मनुष्यों आदि द्वारा पूज्य तथा उन्हें उनका पद प्रदान करनेवाला (1/5/21-22), दयासिन्धु(1/4/97 तथा 8/13/5 आदि), कल्याणकारी(1/3/41) तथा भक्तों के भय को हरनेवाला(1/4/100 तथा 1/13/45 आदि) कहा गया है। भगवान् शिव

सर्वदेवमय हैं, इसलिये उनकी पूजा से सभी चराचर की पूजा हो जाती है– ऐसा वेद–शास्त्रों तथा बुद्धिमानों द्वारा कहा गया है।

पूजिते शंकरे सर्वं पूजिंत सचराचरम्।
मया वेद विवादेषु तथा संकथितं बुधैः।। (मुद्गल पु. 8/13/16)

भगवान् शिव ही समस्त यज्ञादि कर्मों के फलदाता हैं। यही कारण है कि सती यज्ञ में भगवान् शिव के भाग को न देखकर दक्ष से कहती हैं कि तुम्हारा यह यज्ञ–कर्म वेद–विरुद्ध है तथा रुद्र–भाग से विहीन यज्ञ कभी भी फलप्रद नहीं होगा (मुद्गल पु. 1/3/57–58)।

रुद्रभागविहीनोऽयं यज्ञो नैव फलप्रदः। (मुद्गल पु. 1/3/58)

भगवान् शिव की उपरोक्त विशेषताएँ ही शिवभक्ति के विशेष आर्कषण हैं। भगवान् शिव की भक्ति से बाणासुर एवं शुक्राचार्य आदि ने मनोवांछित फल पाया। शुक्राचार्य से बाणासुर ने पंचाक्षर मन्त्र (ॐ **नमः शिवाय**) प्राप्त कर शिव की उपासना की थी (मुद्गल पु. 8/13/3) तथा उससे शिव को प्रसन्न कर यथोचित वरदान प्राप्त किया। अन्य ग्रन्थों में भी इस पंचाक्षर मंत्र को सर्वश्रेष्ठ मन्त्र बताया गया है।

इस पुराण में भगवान् शिव से संबंधित कुछ स्तोत्र हैं जिनका पाठ लोगों की मनोकामना को पूरा करता है। उदाहरण के लिये दक्ष प्रजापति द्वारा रचित स्तोत्र (मुद्गल पु. 1/4/91–100) तथा ब्रह्मा–विष्णु द्वारा की गयी ज्योतिर्लिंग की स्तुति (मुद्गल पु. 1/13/42–48)। भगवान् शिव को स्तोत्र बहुत ही प्रिय हैं, यही कारण है कि वे मात्र स्तोत्र से भी प्रसन्न होकर मनोवांछित वर प्रदान करते हैं।

किन्हीं भी देवपुरुषों या महात्माओं की निन्दा नरक देनेवाली होती है। परन्तु अगर हम सर्वश्रेष्ठ देव भगवान् शिव की निन्दा करें तो उसका क्या फल होगा? इसकी कल्पना कठिन है। इस पुराण में भी बताया गया है कि शिवनिन्दा नरक देनेवाली होती है।

शिवनिन्दाकराः शास्त्रे नारका ज्ञानवर्जिताः। (मुद्गल पु. 1/2/37)

अर्थात्–शास्त्रों में शिवनिन्दक को नरकगामी तथा मूर्ख कहा गया है।

उपसंहार

यह पुराण गणपति भगवान् की विशेषता प्रतिपादित करनेवाला होनेपर भी भगवान् शिव की महत्ता को स्वीकार करता है। यह पुराण अन्य साम्प्रदायिक पुराणों की ही तरह होने के कारण भगवान् शिवसंबंधी प्रसंगों की चर्चा बहुत ही अल्प मात्रा में करता है। फिर भी उन चर्चाओं में भगवान् शिव की महिमा प्रकट होती है।

भगवान् शिव के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों की चर्चा इसमें प्राप्त होती है। सगुण रूप में वे ही ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र होकर सृष्टि का सृजन, पालन एवं संहार करते हैं। वे सम्पूर्ण चराचर के स्वामी,

महादेव, परमेश्वर, सर्वव्यापी, शान्त, त्रिशूलधारी, उमापति, जगदाधार, कालरूप, दयासिन्धु, भक्तों के भय को हरनेवाला, कल्याणकारी, आदि, मध्य एवं अन्तहीन, नीलकण्ठ, आदि हैं। निर्गुण रूप में वे ब्रह्म, पूर्ण तथा ब्रह्मादि सभी द्वारा अज्ञेय हैं। भगवान् शिव सर्वश्रेष्ठ, कल्याणकारी, करुणानिधि तथा शीघ्र प्रसन्न होनेवाले देव हैं इसलिये इनकी उपासना करनी चाहिये। इनकी उपासना से सभी चराचर की उपासना हो जाती है। इनकी उपासना का सर्वोत्तम साधन पंचाक्षर मन्त्र है। इस मन्त्र द्वारा ही उपासना करके बाणासुर ने भगवान् शिव को प्रसन्न किया था।

(यह लेख निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई द्वारा 1976 में प्रकाशित 'मुद्गलपुराणं' की प्रति पर आधारित है।)

S S S S S S S S

तीर्थफल का भागी कौन?

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।।
प्रतिग्रहादुपावृतः संतुष्टो नियतः शुचिः।
अहंकार निवृत्तश्च स तीर्थफलमश्नुते।।
अकल्किको निराहारोऽलब्धाहारो जितेन्द्रियः।
विमुक्तः सर्वदोषैर्यः स तीर्थफलमश्नुते।।
अक्रोधनश्च राजेन्द्र सत्यशीलोदृढव्रतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते।।

(पद्म महापु. स्वर्गखण्ड 11/9-12)

वसिष्ठजी राजा दिलीप से कहते है कि "तीर्थसेवन का फल उसे मिलता है जिसके हाथ, पैर और मन अच्छी तरह वश में हो; जो विद्वान्, तपस्वी और कीर्तिमान् हो तथा जिसने दान लेना छोड़ दिया हो। जो संतोषी, नियमपरायण, पवित्र, अहंकार-शून्य और उपवास (व्रत) करनेवाला हो; जो अपने आहार और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर चुका हो; जो सब दोषों से मुक्त हो तथा जिसमें क्रोध का अभाव हो। जो सत्यवादी, दृढ़-प्रतिज्ञ तथा सम्पूर्ण भूतों के प्रति अपने-जैसा भाव रखनेवाला हो, उसी को तीर्थ का पूरा फल मिलता है।" अत: तीर्थ-फल की प्राप्ति के लिये उपरोक्त गुणों से युक्त होने का प्रयास करना चाहिये।